

मंडे पोजिटिव

हरीश ने 15 हजार रु से शुरू की कंपनी, बच्चों की जान बचाने रातुल अमेरिका छोड़ भारत आए, 16 देशों में काजू म

टेक्नोलॉजी की मदद से ग्रामीण इलाकों में लोगों के जीवन बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं सेल्को, नैनोपिक्स और बेंपू नाम के तीन स्टार्टअप

- सेल्को
- नैनोपि
- बेंपू 20

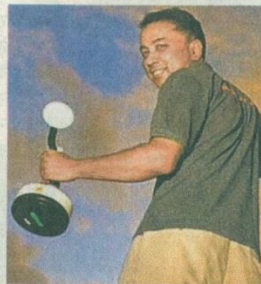
हरीश की कंपनी सेल्को को दो बार मिल चुका है ग्रीन ऑस्कर

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

भारत की करीब 70% आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। इसके बावजूद देश में शुरू होने वाले ज्यादातर स्टार्टअप शहरों में बसने वाले लोगों को ध्यान में रखकर शुरू किए जाते हैं। लेकिन, बीते कुछ वर्षों में छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों के लिए भी कई बेहतरीन शुरुआत हुई है। ये स्टार्टअप टेक्नोलॉजी की मदद से गांवों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का काम कर रहे हैं। हम आपको रू-ब-रू कराने जा रहे हैं तीन ऐसे ही सफल स्टार्टअप से जो अपनी कोशिशों के जरिए भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में खेती से लेकर स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए काम कर रहे हैं।

सेल्को: आईआईटी से इंजीनियरिंग करने के बाद शुरू की सोलर कंपनी, 5 लाख घरों को रोशन किया

हरीश हांडे ने आईआईटी खड़गपुर से इंजीनियरिंग करने के बाद 1995 में नेविल विलियम्स के साथ सिर्फ 15 हजार रुपए की लागत से सेल्को सोलर लाइट नाम की कंपनी शुरू की। कंपनी का मकसद ग्रामीण इलाकों में सोलर एनर्जी के जरिए रोशनी पहुंचाना है। कंपनी सोलर लाइट, सोलर इन्वर्टर, स्ट्रीट लाइट जैसे उपकरण बनाती है। साथ ही ग्रामीणों को इसे खरीदने के लिए लोन दिलवाने में भी मदद करती है। कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और बिहार में सेल्को के कुल 50 ब्रांच मौजूद हैं। सेल्को अब तक पांच लाख से ज्यादा



घरों को सोलर लाइट से रोशन कर चुकी है। कंपनी को दो बार प्रतिष्ठित एशडेन अवॉर्ड (ग्रीन ऑस्कर) मिल चुका है।

बेंपू: ऐसा हेल्थ स्टार्टअप जो ग्रामीण इलाकों में रिस्ट बैंड की मदद से नवजात की जान बचाता है

हाइपोथर्मिया (तेजी से शरीर का तापमान कम होना) नवजात बच्चों की मौत का सबसे बड़ा कारण होता है। जब नवजात इस स्थिति से गुजरता तो है जरूरी कि मां या पिता उसे अपने शरीर से चिपका कर रखे। भारत के ग्रामीण इलाकों में इसके प्रति जागरूकता काफी कम है। इस समस्या को दूर करने के लिए बेंपू नाम के स्टार्टअप ने ऐसा रिस्ट बैंड तैयार किया है जो बच्चे के शरीर के तापमान की मॉनिटरिंग करता है। जैसे ही यह कम होता है बैंड में मौजूद अलार्म ऑन हो जाता है और बच्चे के माता-पिता उचित एक्शन ले पाते हैं। इस



स्टार्टअप को अमेरिका में जन्मे रातुल नारायण ने 2013 में शुरू किया था। वे अब भारत में बस गए हैं।

नैनोपिक्स: कैमरे और तं मदद से काजू की खेती व

आईआईटी मद्रास से इंजीनियरिंग करने वाले शशिरोखर क्रिस ने सुचित्रा बी के साथ मिलकर 2009 में एग्रो स्टार्टअप नैनोपिक्स-आईएसएस की शुरुआत की। यह स्टार्टअप इमेज प्रोसेसिंग और कम्प्यूटर अलगोरिदम के जरिए खेती और बायोटेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में सॉल्यूशन प्रदान कर रहा है। कंपनी ने अब तक का सबसे सफल प्रोडक्ट काजू इंडस्ट्री के लिए बनाया है। नैनो सोर्टर नाम की मशीन काजू की खेती की निगरानी और इसके आकार और प्रकार के आधार पर इसकी छंटनी का काम करती है। भारत